एक-दिवसीय व्याख्यान :–

31 जुलाई, 2021 को प्रेमचन्द जयंती के अवसर पर 'हिंदी साहित्य परिषद् , कालिंदी महाविद्यालय की ओर से एक व्याख्यान 'प्रेमचंद की स्त्रिया' विषय पर आयोजित किया गया. जिसमें मुख्य अतिथि प्रो. रजनी नागपाल (शासी निकाय, कालिंदी महाविद्यालय) और मुख्य वक्ता प्रो.सुधा सिंह (हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय) थी। कार्यक्रम की शुरूआत प्राचार्या प्रो.नैना हसीजा के आशीर्वचन व अतिथि सत्कार से किया गया। प्राचार्या महोदया रोचक संस्मरणों के द्वारा प्रेमचंद के साहित्यिक प्रदेय को यथार्थ के धरातल पर प्रत्यक्ष करती हैं। कार्यक्रम का संचालन डॉ. मंजू शर्मा एवं डॉ.आरती सिंह ने किया। प्रो.रजनी नागपाल ने प्रेमचंद के साहित्य में विभिन्न सशक्त नारी पात्रों के सामाजिक संदर्भ को रेखांकित करते हुए कहा कि प्रेमचंद सृजनधर्मिता के माध्यम से महिला सरोकारों को उपस्थित करते हैं। आज समाज में स्त्रियों के समक्ष बहुमुखी और जटिल समस्याएं हैं, प्रेमचंद बहुत पहले ही पूरी यथार्थता और उसके कारकों को उजागर करते हैं। प्रमचंद के समय से बहुत आगे होने की बात वे कहती हैं। मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. सुधा सिंह प्रेमचंद के दृष्टिकोण को रखती हैं तथा आमजन में लोकप्रियता के निहित कारकों को स्पष्ट करती हुई कहती हैं कि प्रेमचंद अपने समय के दृष्टा और बहुत आगे थे, उन्होंने आमजन के जीवन को जिया और भोगा था। वे प्रेमचंद के हवाले से कहती हैं कि स्त्रियों की स्थिति पुरुष संदर्भ में एक सामाजिक निर्मिति है। प्रो. सुधा प्रेमचंद की लिखकीय प्रवृति और लेखक की कसौटी को समय से जोड़कर देखने की बात को अनेक उद्धरण से सिद्ध करती हैं। प्रेमचंद पर लगाएं गए आक्षेपों का खंडन करती हुई कहती हैं कि प्रेमचंद परिवर्तन के आकांक्षी थे और उनका यह परिवर्तन कोरी लफ्फाजी नही, बल्कि विकल्पों का प्रवर्तन है। व्याख्यान के अंत में प्रो.सुधा ने अध्यापकों और विद्यार्थियों के प्रश्नो के स्मुचित उत्तर दिए और कार्यक्रम का समापन डॉ. मंजु शर्मा के सभी के धन्यवाद ज्ञापन से किया गया ।

विशिष्ठ व्याख्यान :–

16 सितम्बर**, 2019** को "हिंदी साहित्य परिषद्, कालिंदी महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) की ओर से एक विशिष्ट व्याख्यान 'राष्ट्र निर्माण में हिंदी की भूमिका' विषय पर आयोजित की गई। जिसमें विशिष्ट वक्ता के रूप में प्रो. विनोद मिश्र (हिंदी विभाग, केंद्रीय विश्वविद्यालय त्रिपुरा) और प्रो.आलोक पांडे (हिंदी विभाग हैदराबाद विश्वविद्यालय) मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित थे। साथ में प्रो. नैना हसीजा (प्राचार्या, कालिंदी महाविद्यालय) की की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम में हिंदी विभाग के साथ महाविद्यालय के अन्य शिक्षक तथा दूसरे प्रांतो के सम्मानित प्राध्यापक एवं शोधार्थी सम्मिल्लित हुए। विभाग प्रभारी डॉ. आरती सिंह ने कार्यक्रम की शुरूआत की। मंच संचालन डॉ. मंजू शर्मा, डॉ.ब्रम्हानंद, डॉ. सुरेश मीणा, डॉ. हेमंत रमण रवि, डॉ. ममता चौरसिया ने किया। कार्यक्रम का प्रारंभ प्राचार्या महोदया के आशीर्वचन एवं अतिथि सत्कार से किया गया। प्रो.विनोद मिश्र ने अपने व्याख्यान में कहा कि राष्ट्र की संकल्पना एवं राष्ट्र को बनाने में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। एक राष्ट्र के लिए एक भाषा का होना जरूरी है। हिंदी भाषा के माध्यम से राष्ट्र की परिकल्पना को विशेष रुप से जाना जा सकता है। भाषा के माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत स्वराज, राष्ट्रभाषा, स्वावलंबन, स्वदेशी, स्वास्थ्य, शिक्षा, सुशासन की बात की जा सकती है। आगे उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि देश की एकता, अखंडता, सांस्कृतिक समन्वय में भाषा की समासिकता और जीवंतता को हम प्रत्यक्ष देख सकते हैं। जब हम हिंदी भाषा की बात करते हैं तो उसके अनुप्रयोग के व्यापकता को भी देखते हैं। उन्होंने बताया कि 'हिंदी' साहित्य भी भाषा के रूप में लगभग एक हजार साल बिता चुकी है। प्रो.मिश्र हिंदी भाषा की सीमाओं, संभावनाओं और संभावनाओं के विकास पर भी विस्तृत रूप से चर्चा करते हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि भारतीय समाज और राष्ट्र के निर्माण की परिकल्पना भारतीय शिक्षा और भारतीय भाषा के बिना संभव ही नहीं है। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो. आलोक पांडे तथ्यों और आंकड़ों से हिंदी भाषा की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डालते हुए विषय के महत्व को स्पष्ट करते हैं। प्रो. पांडे देश की निर्धनता और पिछड़े होने के मूल में हिंदी भाषा के राष्ट्रीय फलक पर भाषाई एकता की अस्वीकृति को देखते हैं।

व्याख्यान को आगे बढ़ाते हुए प्रो. आलोक सभी को हिंदी की यथास्थिति और वर्तमान समय में शिक्षा जगत में हिंदी पर घहराते संकटों से परिचित कराने के साथ ही सकारात्मक समाधान भी उपस्थित करते हैं। उनका कहना था कि आज भी हम हिंदी को प्रयोग की भाषा के रूप में सर्वमान्यता नही दिला सके हैं, इसलिए आवश्यक यह है आज हिंदी का प्रचार-प्रसार वैश्विक स्तर पर करें, जिससे भारत के ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व के लोग हिंदी के महत्व को अंगीकार कर सकें। आगे वे अपने व्याख्यान में कहते हैं कि हम सभी को राष्ट्र के सम्मान के साथ-साथ देश की राष्ट्र-भाषा हिंदी के प्रयोग के जरिए देशप्रेम को प्रकट कर सकते हैं । अभी हिंदी भाषा को और आगे बढ़ाने की जरूरत है इसके लिए हमको हमारी सपनों की भाषा हिंदी को आत्मसात करने की आवश्यकता है, हिंदी भाषा में अगर हम सभी बढ़-चढ़ कर काम करेंगे तो हिंदी पूरे विश्व में और अधिक सुदृढता से स्थापित हो सकेगी। व्याख्यान के अंत में अनेक महत्त्वपूर्ण प्रश्न किये गए। कार्यक्रम के अंत में डॉ. मंजु शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।